

भारतीय साहित्य की एकता

लेखक परिचय:

नंददुलारे वाजपेई जी का जन्म सन उन्नीस सौ छह में हुआ था आप काशी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्य किया बाद सागर विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष बने । विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। आप शुक्लोत्तर समय के सर्वश्रेष्ठ समीक्षक हैं । वाजपेई जी ने भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा पद्धतियों का गहरा अध्ययन किया। आपने छायावाद और रहस्यवाद संबंधी भ्रांतियों को दूर करने की कोशिश की।

प्रमुख कृतियाँ :

हिंदी साहित्य बीसवीं सदी आधुनिक साहित्य, जयशंकर प्रसाद कवि, निराला, प्रेमचंद, साहित्य विवेचन, हिंदी साहित्य रचना और विचार राष्ट्रीय साहित्य नई कविता आदि आप की प्रमुख कृतियाँ हैं।

सारांश :

भारतीय साहित्य की एकता निबंध में लेखक ने एकता की ओर संकेत किया है। राष्ट्रीय एकता के लिए साहित्य की एकता परम आवश्यक है । अतः प्राचीन साहित्य के आधार पर नवीन साहित्य का निर्माण करना है ।

भारतीय साहित्य की एकता पर ध्यान देने के पहले यहाँ के विभिन्न भाषाओं के साहित्य पर ध्यान देना पड़ता है। हमारे देश में भाषाएँ अलग होने पर भी प्रवृत्ति एक ही है । साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य में विभिन्न प्रदेशों की तथा जनपदों की विशेषताएँ पाई जाती हैं तथा किसी भाषा की विशेषता भी पाई जाती हैं उदाहरण के लिए मराठी साहित्य में अच्छे-अच्छे नाटक हैं इस विभिन्नता के भीतर एक मूलभूत एकता है। किसी साहित्य की विशेषताओं को लेकर अन्य प्रदेश के लोग अनुकरण करेंगे, उदाहरण के लिए बंगाल में रविंद्र का काव्य, बंकिम चंद्र के उपन्यास तथा बृजेंद्र राय के नाटकों को अनेक प्रदेश के लोग अपना लिया। हिंदी में उन्हीं भावनाओं और शैलियों की रचना कुछ साल पछात्तआरंभ हुई। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय साहित्य में आदान-प्रदान की परंपरा है।

विश्व भर के विभिन्न साहित्यिक कृतियों को हम इस तरह नहीं ग्रहण कर रहे हैं जिस तरह भारतीय साहित्य कृतियों को । कारण यही है कि हमारे भारतीयों के दार्शनिक और सांस्कृतिक आदर्श में भिन्नताएँ हैं । इससे स्पष्ट है कि हम अपनी सारी विरासत को छोड़कर दूसरे देशों के साहित्य का अनुसरण नहीं कर पायेंगे । विदेशों के नए से नए साहित्य का परिचय जरूर प्राप्त करना है, लेकिन आँख मूंदकर करने से कोई लाभ नहीं उठा सकते क्योंकि प्रत्येक देश को अपनी विकास अपनी विशिष्ट परंपरा के अनुसार ही करना पड़ता है।

भारत देश अपनी विशेषता को बनाये रखने के लिए अपने साहित्य, अपनी कला, अपने जीवन दर्शन द्वारा संसार को एक नवीन दिशा और ध्यान देने की चेष्टा की है। प्रगति दौड़ने की अपेक्षा प्राचीन साहित्य वैभव की ओर दृष्टि डालना है। वाल्मीकि तथा कालिदास जैसे महान कवि भारत के लिए मूल्यवान हैं। साहित्य की समृद्धि करने में बंगाल में चंडीदास, मिथिला में विद्यापति, उत्तर भारत में कबीर, तुलसी, सूर, महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, गुजरात में नरसी मेहता और राजस्थान में मीराबाई आदि लोगों ने अपना योगदान दिया। भक्ति काल को स्वर्ण युग इसीलिए कहा गया कि इस काल के कवि स्वांतः सुखाय रचना करते थे। इतना ही नहीं उनके मूल्यवान वाणी से लोगों में परिवर्तन आने लगा। उन दिनों कवि स्वार्थ के बजाय लोक हित के लिए साहित्य का निर्माण करते थे।

रीतिकाल के दरबारी कवि श्रृंगार कविता और नायिका की नख-शिख वर्णन करते रहते थे। इस काल में चित्र कला और संगीत में भी प्रगति देखने को मिलती है। साहित्य देश को विभाजित ना करके संगठित करने का माध्यम है। हमारे देश की सांस्कृतिक विशेषता यही है कि प्रत्येक प्रांत के कार्यों में छिपी हुई एकता। भविष्य में भी यही एकता रहेगी। भारतीय साहित्य की एकता का आदर्श सदैव हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेरणादायक है।

विशेषताएँ :

1. राष्ट्रीय एकता तभी संभव है जब साहित्य की एकता हो।
2. भारतीय परंपरा बहुत पुरानी है।
3. विदेशों के नए से नए साहित्य का परिचय रखना चाहिए।
4. प्रत्येक देश को अपना विकास अपनी विशिष्ट परंपरा के अनुसार ही करना पड़ता है।
5. राष्ट्रीय संस्कृतियों के उत्थान और पतन के अवसर भिन्न - भिन्न हुआ करते हैं।
6. अपने देश के प्राचीन साहित्य को देखें, तो उसमें एक मूलभूत एकता दिखाई देगी।
7. हमारे देश में विविधता में एकता लाने की चेष्टा चिरकाल से की गई है और इस कार्य में साहित्यकारों ने विशेष योग दिया है।
8. दक्षिणी भाषाओं में अलवार संतों ने भक्ति - काव्य की रचनाएँ प्रस्तुत कीं।
9. भारतीय साहित्य की एकता का आदर्श सदैव हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेरणादायक है।

संभाव्य प्रश्न :

1. भारतीय साहित्य में एकता के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालिए।
2. भारतीय साहित्य की विशिष्टताओं को उल्लेख कीजिए।